

आज जैन विधी से मन्त्र साधना के बारे में बात होगी। जैन तन्त्र शास्त्र में भी वैदिक प्रकार की तरह से ही अंगन्यास व करन्यास आदि होते हैं। परन्तु मन्त्र अलग प्रकार के होते हैं। जिस विधी को सकलीकरण कहा जाता है। जो कि निम्न प्रकार से होगा।

ॐ क्ष्वी भू शुद्धयतु स्वाहा।

ॐ ह्रीं अर्हं क्ष्मठ आसन निक्षिपामि स्वाहा।

ॐ ह्रीं ह्यु ह्यु णिसिहि णिसिहि आसने उपविशामि स्वाहा।

ॐ ह्रीं मौन स्थिताय मौनव्रत गृण्हामि स्वाहा।

उपरोक्त मन्त्रों से हाथ में शुद्ध जल लेकर सभी पूजा के बर्तनों की शुद्धि करें। तत्पश्चात्

ॐ ह्रीं अर्हं झी वं मं हं सं तं पं झ्वीं क्ष्वीं हं सः अ सि आ उ सा समस्त तीर्थ जलेन शुद्ध पात्रे निक्षिप्त पूजाद्रव्याणि शोधयामि स्वाहा।

मन्त्र से सर्व पूजा द्रव्यों की शुद्धि करें और चिन्तन करें कि मेरे चारों ओर प्रज्ज्वलित अग्नि से यह सप्तधातुमय शरीर जल रहा है। इसके बाद

ॐ ॐ ॐ रं रं रं झ्रौं झ्रौं झ्रौं अ सि आ उ सा दर्भासने उपवेशनं करोमि स्वाहा।

मन्त्र को पढ़कर आसन पर बैठें और

ॐ ह्रीं ओं क्रों दभैरच्छादनं करोमि स्वाहा।

ॐ ह्रीं अर्हं भगवतो जिनभास्करस्य बोधसहस्रत्र किरणैर्मनोकमैधनद्रव्यं शोषयामि धे धे स्वाहा। नोकर्म शोषणम्।

मन्त्रों को पढ़कर मन में ऐसे विचार करें कि मेरे दुष्कर्मों का शोषण हो रहा है और इसके बाद

ॐ ह्रां ह्रीं हूं ह्रौं ह्रः ॐ ॐ ॐ रं रं रं ह्यल्व्यूज्वल ज्वल प्रज्वल प्रज्वल संदह संदह कर्ममलंदह दह दुखं पच पच पापं हन हन हूं फट् घे घे स्वाहा।

इस मन्त्र को पढ़कर ध्यान करें कि मेरे सभी जाने अन्जाने में किए गए दुष्कर्म जलकर राख हो गए हैं। इसके बाद

ॐ ह्रीं अर्हं श्री जिनप्रभंजन मम् कर्मभस्म विधूननं कुरु कुरु स्वाहा।

इस मन्त्र को पढ़कर मन में विचार करें कि कर्म जलकर उनकी राख उड़ गई है। इसे भस्मापसरणम् कहा जाता है।

अब यहाँ पर गुरु पंचमुद्रा बनाकर उसे मस्तक पर उल्टा रखकर अमृत बीजमन्त्र से अपनी शुद्धि करें। निम्नलिखित अमृत मन्त्र से हाथ में लिए हुए जल को मन्त्रित करके अपने सिर पर डालें। इसे अमृत प्लावन मन्त्र भी कहा जाता है।

ॐ अमृते अमृतोद्भवे अमृतवर्षिणि अमृत स्रावय स्रावय स स क्लीं क्लीं ब्लूं ब्लूं द्राँ द्राँ द्री द्री द्रावय द्रावय हं झ झ्वी क्ष्वी ह सः अ सि आ उ सा मम् सर्वांग शुद्धि कुरु कुरु स्वाहा।

अब दोनों हाथों को मिलाकर, हाथ जोड़े-जोड़े ही निम्नलिखित मन्त्र अनुसार अंगन्यास/अंगरक्षण करें। मन्त्रानुसार जिस अंग का नाम मन्त्र में आया है उसी अंग का स्पर्श करें।

ॐ ह्रौं णमो अरहताण स्वाहा। (अंगुष्ठ)

ॐ ह्रौं णमो सिद्धाण स्वाहा। (तर्जनी)

ॐ ह्रूं णमो आयरियाण स्वाहा। (मध्यमा)

ॐ ह्रौं णमो उवज्झायाण स्वाहा। (अनामिका)

ॐ ह्र णमो लोए सव्व साहूण स्वाहा। (कनिष्ठिका)

(करन्यास मन्त्र)



COLLECTION OF VARIOUS
-> HINDUISM SCRIPTURES
-> HINDU COMICS
-> AYURVEDA
-> MAGZINES

FIND ALL AT [HTTPS://DSC.GG/DHARMA](https://dsc.gg/dharma)

Made with



By

Avinash/Shashi

**Icreator of
hinduism
server!**

 **KAPWING**



COLLECTION OF VARIOUS
-> HINDUISM SCRIPTURES
-> HINDU COMICS
-> AYURVEDA
-> MAGZINES

FIND ALL AT [HTTPS://DSC.GG/DHARMA](https://dsc.gg/dharma)

Made with



By

Avinash/Shashi

**Icreator of
hinduism
server!**

 **KAPWING**

ॐ हौं ह्रीं ह्रूं ह्रौं ह्रः व म ह स तं पं अ सि आ उ सा स्वाहा । (करतलकरपृष्ठ)

(हस्त द्वय मुकुलीकरण मंत्र)

अर्ह नाथस्य मन्त्र हृदय सर सिजे सिद्धं मंत्रं ललाटे ।

प्राच्यामाचार्य मंत्र पुनर्वटुवटे पाठकाचार्य मंत्र ।।

वामे साधो स्तुतिं मे शिरसि पुनरिमानं स योनीभिदेशे ।

पार्श्वाभ्यां पंच शून्यैः सह कवच शिरोऽङ्गन्यास रक्षा करोमि ।।

ॐ हौं णमो अरहंताणं रक्ष रक्ष स्वाहा । (हृदय कवचं)

ॐ ह्रीं णमो सिद्धाणं रक्ष रक्ष स्वाहा । (मुखम्)

ॐ ह्रूं णमो आइरियाण रक्ष रक्ष स्वाहा । (दक्षिणायाम्)

ॐ ह्रौं णमो उवज्झायाणं रक्ष रक्ष स्वाहा । (पृष्ठागम्)

ॐ ह्रः णमो लोए सव्व साहूण रक्ष रक्ष स्वाहा । (वामांग)

ॐ हौं णमो अरहताण रक्ष रक्ष स्वाहा । (ललाट भाग)

ॐ ही णमो सिद्धाण रक्ष रक्ष स्वाहा । (उर्ध्वभाग)

ॐ ह्रूं णमो आइरियाण रक्ष रक्ष स्वाहा । (शिरो दक्षिण भागं)

ॐ ह्रौं णमो उवज्झायाण रक्ष रक्ष स्वाहा । (शिरो अपर भाग)

ॐ ह्रः णमो लोए सव्वसाहूण रक्ष रक्ष स्वाहा । (शिरो वाम भाग)

ॐ हौं णमो अरहंताण रक्ष रक्ष स्वाहा । (दक्षिण कुक्षं)

ॐ ह्रीं णमो सिद्धाण रक्ष रक्ष स्वाहा । (वाम कुक्षं)

ॐ ह्रूं णमो आइरियाण रक्ष रक्ष स्वाहा । (नाभि प्रदेश)

ॐ ह्रौं णमो उवज्झायाण रक्ष रक्ष स्वाहा । (दक्षिण पार्श्व)

ॐ ह्रः णमो लोए सव्व साहूण रक्ष रक्ष स्वाहा । (वाम पार्श्व)

यहाँ पर यह अंगन्यास पूर्ण हुआ। इसके बाद स्वात्मरक्षा के लिए निम्नलिखित मन्त्रों द्वारा दसों दिशाओं का बन्धन करें। जिससे कि किसी भी प्रकार का विघ्न व बाधाएँ साधनाकाल के दौरान उत्पन्न ना हो।

ॐ क्षा हा पूर्वे ।

ॐ क्षी ही अग्नौ ।

ॐ क्षी ही दक्षिणे ।

ॐ क्षे हे नैऋते ।

ॐ क्षे है पश्चिमे ।

ॐ क्षो हो वायव्ये ।

ॐ क्षाँ ह्रौं उत्तरे ।

ॐ क्ष हं ईशाने ।

ॐ क्षः ह्रः भूतले ।

ॐ क्षी ही उर्ध्वे ।

ॐ नमोऽर्हते भगवते श्रीमते समस्त दिग्बन्धन करोमि स्वाहा ।

उपरोक्त मन्त्रों से क्रमपूर्वक हर दिशा में तर्जनी उंगली घुमाएं। दाहिने हाथ की तर्जनी उंगली पर अ सि आ उ सा केसर की स्याही से लिखें। इसके बाद निम्न मन्त्र से परमात्मा का ध्यान करें।

ॐ हौं णमो अरहंताणं अर्हद्भ्यो नमः ।

ॐ ह्रीं णमो सिद्धाणं सिद्धेभ्यो नमः ।

इसके बाद निम्नलिखित मन्त्र से पुष्प और पीली सरसों को सात बार अभिमन्त्रित करके सभी दिशाओं में फैकें और मन्त्र का उच्चारण करते हुए सभी दिशाओं में ताली बजावें व तीन बार चुटकी बजावें। मन्त्र इस प्रकार से है।

ॐ नमोऽर्हते सर्व रक्ष रक्ष हूँ फट् स्वाहा ।

अन्त में इस मन्त्र के द्वारा जौ और पीली सरसों अभिमन्त्रित करें और अपने दाहिनी दिशा में डालें।

ॐ ह्रीं अर्ह श्री कलि कुंड स्वामिन् स्फ्रां स्फ्री स्फ्रूं स्फ्रें स्फ्रैं स्फ्रों स्फ्रं स्फ्रं स्फ्रः हू क्षू फट्

इतीन् घातय घातय विघ्नान् स्फोटय स्फोटय । पर विद्यां छिन्द छिन्द आत्म विद्यां रक्ष रक्ष

हूँ फट् स्वाहा ।

यहाँ सकलीकरण सम्पूर्ण होता है। जिससे आपके लिए जैन मन्त्र की साधना करने के रास्ते खुल जाते हैं।

इसके अलावा कुछ ध्यान में रखने योग्य बातें हैं जो साधक को ध्यान में रखनी आवश्यक हैं।

- ❖ जो भी व्यक्ति जिस भी स्थान पर साधना करने जा रहा है। सर्वप्रथम उस स्थान के देवता या रक्षक देव से प्रार्थना करे कि मैं आपके इस स्थान पर सर्वार्थ हित के लिए साधना करने जा रहा हूँ जिसके लिए मैं इस स्थान पर इतने समय के लिए ठहरूँगा। तब तक के लिए आप मुझे सहयोग और आज्ञा प्रदान करें तथा साधना काल में जो भी समस्याएँ, बाधाएँ व संकट हों तो आप उन्हें दूर करना और क्षमा भाव रखना। साथ ही कहें कि मैं लोकहित के लिए सिद्धि प्राप्त करने के लिए तेरे इस स्थान में रहने के लिए आया हूँ। तेरी रक्षा का आश्रय लिया है। अगर मेरे ऊपर किसी भी प्रकार का संकट, उपद्रव या भय आए तो आप उसका निवारण करना।
- ❖ मन्त्र साधना के लिए जाते वक्त एक सहयोगी को अपने साथ ले जाएँ जिससे कि वह आपका भोजन वगैरा बना सके। कपड़े धो सके और जब आप साधना में बैठें तो वह आपके सामान की चौकसी रख सके।
- ❖ साधना की शुरुआत में सकलीकरण के द्वारा अपनी रक्षा कर लिया करें जिससे कि कोई विघ्न साधना में उत्पन्न ना हो। साथ ही अगर रक्षा मन्त्र का जाप कर लिया जाए तो साँप, बिच्छू या कोई जंगली जन्तु आपको कष्ट नहीं दे सकेगा। साधना सम्पूर्ण होने की स्थिति में जब देवी विक्रिया से कोई डर भय उत्पन्न हो तो डरें नहीं। मनोकामना पूर्ण होगी।
- ❖ जहाँ तक सम्भव हो मन्त्र सिद्धि ग्रीष्म ऋतु में ही करें। जिससे कि सर्दी के कारण कोई बाधा उत्पन्न ना हो। मन्त्र सिद्धि में धोती और दुपट्टा दो ही कपड़े रखें। जो कि शुद्ध व सूती हों। ऊनी व रेशमी नहीं होने चाहियें। उन्हें केवल मन्त्र सिद्धि के समय में ही पहनें। उन्हें पहन कर टायलेट नहीं जाएँ। खाना ना खाएं और सोएं नहीं। जपोपरांत उन्हें निकालकर अलग से रख दें और प्रतिदिन स्नान से शुद्ध होकर जप के लिए ही पहनें। स्त्री सेवन निषिद्ध है। गृहकार्य छोड़कर एकान्त में जप करें।
- ❖ मन्त्रजाप पद्मासन में बैठकर करें। जैसा कि जैन प्रतिमाओं का आसन होता है। बायाँ हाथ गोद में रखकर दाहिने हाथ से जप करें या जो मन्त्र बायें हाथ से जपना लिखा हो उसमें दाहिना हाथ गोद में रखकर बायें हाथ से जप करें।
- ❖ जिस मन्त्र में अन्त में स्वाहा लिखा हो उस मन्त्र के जाप के समय सामने धूप जलती रहनी चाहिये।
- ❖ जिस उंगली और अंगूठे से जाप करना लिखा हो उन्हीं से ही जाप करें। अंगूठे को अंगुष्ठ कहते हैं। अंगूठे के साथ वाली उंगली को तर्जनी कहते हैं। बीच वाली उंगली को मध्यमा कहते हैं। मध्यमा के साथ वाली उंगली को अनामिका और पाँचवीं सबसे छोटी उंगली को कनिष्ठिका कहते हैं। मोक्ष व धर्म से संबंधित मन्त्रों के जाप के लिए अंगुष्ठ के साथ तर्जनी, शान्ति के लिए मध्यमा, सिद्धि के लिए अनामिका और सर्व सिद्धि के लिए कनिष्ठिका उंगली श्रेष्ठ है। अन्यथा जप निष्फल हो जाता है और मन्त्र सिद्धि नहीं होती। जप में माला के सुमेरू का उलंघन नहीं करना चाहिये। अन्यथा जप निष्फल होता है। व्याकुल चित से भी मन्त्रजप ना करें अन्यथा सब निष्फल होगा।
- ❖ मन्त्र सिद्ध होगा या नहीं उसे देखने की विधि:
आप जिस मन्त्र की साधना करने जा रहे हैं। उस मन्त्र के अक्षरों को तीन से गुणा करें। फिर अपने नाम के अक्षरों को उसमें मिला दें। उस संख्या को १२ से भाग दें। शेष का फल निम्न प्रकार से जानें।
५ और ६ बाकी बचे तो मन्त्र सिद्ध हो जाएगा।
६ और १० बाकी बचे तो देरी से सिद्ध होगा।
७ और ११ बाकी बचे तो सब अच्छा होगा।
८ और १२ बाकी बचे तो मन्त्र सिद्धि नहीं होगी।
परन्तु यदि ॐ, ह्रीं, श्रीं, क्लीं में से कोई भी एक बीज मन्त्र जप किए जाने वाले मन्त्र के आरम्भ में जोड़ कर जप करें तो मन्त्र सिद्धि अवश्य होगी।

जैन परम्परा के विविध पूजा विधान:

तन्त्र में जैन परम्परा के विभिन्न अनुष्ठानों में गृहस्थ के नित्यकर्म के रूप में जिनपूजा को प्रथम स्थान दिया गया है। जैन परम्परा में स्थानकवासी, श्वेताम्बर-तेरापंथ व दिगम्बर तारणपंथ को छोड़कर शेष परम्पराएँ जिनप्रतिमा के पूजन को एक आवश्यक कर्तव्य मानती हैं।

श्वेताम्बरों में पूजा संबंधी अष्टप्रकारी, स्नात्र, जन्मकल्याण, पंचकल्याण, लघुशान्तिस्नात्र, बृहद्शान्तिस्नात्र, नमिऊण, अर्हत, सिद्धचक्र, नवपद, सत्रहभेदी, अष्टकर्म, अन्तरायकर्म व भक्तामर आदि पूजा अनुष्ठान प्रचलित हैं।

दिगम्बर परम्पराओं में अभिषेकपूजा, नित्यपूजा, देवशास्त्रगुरुपूजा, जिनचैत्यपूजा और सिद्धपूजा आदि प्रचलित हैं।

उपरोक्त पूजाओं के अतिरिक्त पर्वदिनपूजा आदि विशिष्ट पूजाओं का भी वर्णन मिलता है। जिसके अन्तर्गत षोडशकारणपूजा, पंचमेरूपूजा, दशलक्षणपूजा, रत्नत्रयपूजा आदि पूजाएँ आती हैं।

दिगम्बर परम्पर की पूजा पद्धति में बीसपंथ और तेरापंथ के कुछ मतभेद हैं। जहाँ बीसपंथ में पुष्पों व अन्य संचित द्रव्यों से जिनपूजा की जाती है। वहीं तेरापंथ सम्प्रदाय में उसका निषेध है। पुष्प के स्थान पर वे लोग रंगीन अक्षतों (चावलों या तन्दुलों) का प्रयोग करते हैं। इसी प्रकार बीसपंथ में बैठकर और तेरापंथ में खड़े होकर पूजा करने का विधान या परम्परा है।

जैन परम्परा के विविध पूजा विधान:

जैन परम्परा में जो मन्त्र उपलब्ध होते हैं। उन्हें अपने ऐतिहासिक विकास क्रम और अन्य तान्त्रिक परम्पराओं के प्रभाव की दृष्टि से तीन भागों में विभाजित किया जा सकता है।

प्रथम वर्ग का स्वरूप आध्यात्मिक है। जिनमें किसी भी लौकिक आकांक्षा की पूर्ति की कामना नहीं है और इनके उपास्य भी जैनियों के अपने पूज्य पुरुष ही हैं। इस प्रकार के मन्त्रों में मुख्यतः नमस्कार संबंधी मन्त्र आते हैं। जैसे **नमो अरिहंताणं, नमो आयरियाणं, नमो उवज्झायाणं** आदि। इस प्रकार के मन्त्रों में ध्यान देने योग्य बात यह है कि इन मन्त्रों में जिन्हें भी नमस्कार किया गया है। वे कोई देव ना होकर साधना की विशिष्ट अवस्थाओं को प्राप्त मानवीय व्यक्तित्व ही हैं। ये नमस्कार संबंधी मन्त्र जैन परम्परा के प्राचीनतम मन्त्र हैं। वर्तमान में ये मन्त्र पंचपदात्मक हैं क्योंकि इसमें पंचपरमेष्ठिन् को नमस्कार किया जाता है। जो कि अर्हन्त, सिद्ध, आचार्य, उपाध्याय और मुनि (साधु) हैं। नीचे दिए गए मन्त्र को जैनों का गायत्री मन्त्र कहा जाता है क्योंकि प्रत्येक लौकिक कार्य और आध्यात्मिक साधना के प्रारम्भ में इसका उच्चारण किया जाता है। परम्परागत मान्यतानुसार इसे समस्त पूर्व साहित्य का सार कहा जाता है।

चवदह पूरव केरो सार, सदा समरो मंत्र नवकार। इस मन्त्र की साधना से घटित अलौकिक

चमत्कारों से सम्बंधित अनेकानेक अनुभूतियाँ और कथाएँ जैन परम्परा में प्रचलित हैं। सामान्य जैन व्यक्ति को भी यह विश्वास है कि यह मन्त्र अनादि-अनिधन और चमत्कारी है।

दूसरे वर्ग में वे मन्त्र आते हैं जिनका मूलस्वरूप तान्त्रिक परम्परा से गृहीत है। परन्तु उन्हें जैन दृष्टिकोण के आधार पर विकसित किया गया है। इन मन्त्रों की साधना में किसी सीमा तक लौकिक मंगल और अलौकिक शक्तियों की प्राप्ति की कामना निहित होती है। इन मन्त्रों के देवता शान्तिनाथ और पार्श्वनाथ आदि कुछ तीर्थंकर या यक्ष-यक्षिणी आदि के रूप में देवता होते हैं। जिन्हें जैनों द्वारा अन्य तान्त्रिक परम्पराओं से ग्रहण कर अपने देवकुल का सदस्य बना लिया है। इस प्रकार के मन्त्रों का उदाहरण निम्न प्रकार से हैं।

ॐ नमो अरिहो भगवओ अरिहंत-सिद्ध-आयरिय-उवज्झाय सव्वसंघ धम्मतिथपवयणस्स।

ॐ नमो भगवइए सुयदेवयाए, संतिदेवयाए, सव्वदेवयाणं दसण्हंदिसापालाणं पंचण्हं लोकपालाणं ठः ठः स्वाहा।

तीसरे वर्ग में आने वाले मन्त्र तान्त्रिक परम्परा के हैं जिन्हें जैनों के द्वारा केवल देवता का नाम बदलकर अपना लिया गया है। ये मन्त्र संस्कृतनिष्ठ हैं और इनकी रचना शैली भी पूर्णतः तान्त्रिक परम्पराओं के अनुरूप है। जैनों की वे तान्त्रिक साधनाएं, जो मुख्यतः भौतिक आकांक्षाओं की पूर्ति के लिए सम्पन्न की जाती हैं और जिनमें षट्कर्मों का उपयोग होता है। इसी तीसरे वर्ग के मन्त्रों से सम्पन्न की जाती हैं। उदाहरण निम्न प्रकार से हैं।

ॐ अर्हन्मुखकमलवासिनि। पापात्मक्षयंकरि। श्रुतज्ञानज्वालासहस्रप्रज्वलिते मत्पापं हन हन दह दह क्षाँ क्षीं क्षुँ क्षीं क्षः क्षीर धवले। अमृतसंभवे। वं वं हु हुं स्वाहा।

उपरोक्त मन्त्र में अपनी उपास्य देवी से मात्र पापों के शमन की प्रार्थना की गई है। किन्तु इस वर्ग में अनेक ऐसे मन्त्र भी हैं। जो भौतिक आकांक्षाओं की पूर्ति एवं शत्रु के विनाश से संबंधित हैं। जैसे कि

ॐ नमो भगवति, अम्बिके, अम्बालिके, यक्षिदेवी। यूँ यूँ ब्लै हस्वलीं ब्लूँ हसौं र रं र रां रां नित्य किलन्ने मदनद्रवे मदनातुरे। ह्रीं क्रों अमुकां वश्याकृष्टिं कुरु कुरु संवौषट्।

इसी प्रकार ज्वालामालिनी प्रयोग में भी छेदन, भेदन, बंधन, ताड़न, ग्रसन, नासन, दहन आदि की आकांक्षाएँ परिलक्षित होती हैं। जो कि मूलतः जैन जीवन दृष्टि के विरुद्ध है। परन्तु इतना तो मानना ही होगा कि अन्य तान्त्रिक साधनानुष्ठानों के परिणामस्वरूप जैन मन्त्र साधना में भी ऐसी अनेक बातें प्रविष्ट हो गई हैं। जो सिद्धान्ततः जैन परम्परा को मान्य नहीं हो सकती। परन्तु जैन परम्परा में इस प्रकार के प्रयोगों की उपस्थिति यह अवश्य सूचित करती है कि परवर्तीकाल (लगभग ग्यारहवीं व बारहवीं शती) में जैन धर्म पर तन्त्र परम्परा का व्यापक प्रभाव पड़ा और जैन आचार्यों ने अनेक तान्त्रिक प्रयोगों को बिना पूर्व समीक्षा के ही अपना लिया था।



COLLECTION OF VARIOUS
-> HINDUISM SCRIPTURES
-> HINDU COMICS
-> AYURVEDA
-> MAGZINES

FIND ALL AT [HTTPS://DSC.GG/DHARMA](https://dsc.gg/dharma)

Made with



By

Avinash/Shashi

**Icreator of
hinduism
server!**

 **KAPWING**



COLLECTION OF VARIOUS
-> HINDUISM SCRIPTURES
-> HINDU COMICS
-> AYURVEDA
-> MAGZINES

FIND ALL AT [HTTPS://DSC.GG/DHARMA](https://dsc.gg/dharma)

Made with



By

Avinash/Shashi

**Icreator of
hinduism
server!**

 **KAPWING**

विभिन्न महत्वपूर्ण मन्त्र

ॐ ह्राँ ह्रीं ह्रूं ह्रें ह्रौं ह्रः अ सि आ उ सा सम्यग्रदर्शनज्ञान—चरित्रेभ्यो नमः । इस मन्त्र को ऋषिमण्डलमन्त्रराज मन्त्र कहा जाता है जिसे नियमपूर्वक आठ हजार जपने से सभी इष्ट कार्यों की सिद्धि होती है ।

चत्तारि मंगलं । अरिहंता मंगलं । सिद्धा मंगलं । साहू मंगलं । केवलिपण्णत्तो धम्मो मंगलं ।

चत्तारि लोगोत्तमा । अरिहंत(ता) लोगो(गु)त्तमा । सिद्ध(द्धा) लोगो(गु)त्तमा । साहु लोगो(गु)त्तमा । केवलिपण्णत्तो धम्मो लोगो(गु)त्तमो । चत्तारि सरणं पवज्जामि । अरिहंते सरणं पवज्जामि । सिद्धे सरणं पवज्जामि । साहू सरणं पवज्जामि । केवलिपण्णत्तं धम्मं सरणं पवज्जामि । इस मन्त्र को मुक्तिदाविद्या कहा जाता है, जिसकी साधना करने पर मोक्षरूपी फल की प्राप्ति होती है ।

ॐ अरिहंत—सिद्ध—आयरिय—उवज्जाय—सव्वसाहु—सव्वधम्मतिथयराणं ॐ नमो भगवईए सुयदेवयाए संतिदेवयाणं सव्वपवयणदेवयाणं दसण्हं दिसापालाणं पन्व(ण्हं) लोगपालाणं ॐ ह्रीं अरिहंतदेवं नमः । इस मन्त्र का १०८ बार जप करने से सर्वमनोरथ सिद्धि होती है ।

ॐ नमो अरिहंताणं — शिरोरक्षा ।

ॐ नमो सिद्धाणं — मुखरक्षा ।

ॐ नमो आयरियाणं — दक्षिणहस्तरक्षा ।

ॐ नमो अवज्जायाणं — वामहस्तरक्षा ।

ॐ नमो लोए सव्वसाहूणं । यह रक्षा मन्त्र है विपरीत कार्य में जिसके प्रयोग से साधना निर्विघ्न सम्पन्न होती है ।

ॐ हृदि ।

ह्रीं मुखे ।

नमो नाभौ ।

अरि वामे ।

हंता वामे ।

णं शिरसि ।

ॐ दक्षिणे बाहौ ।

ह्रीं वामे बाहौ ।

नमो कवचम् ।

सिद्धाणं अस्त्राय फट् स्वाहा । यह भी रक्षा मन्त्र है । जिसे शोभन कार्य के दौरान प्रयोग करने पर आत्मा की रक्षा होती है ।

ॐ नमो अरिहंताणं,

नमो सिद्धाणं,

नमो आयरियाणं,

नमो उवज्जायाणं,

नमो लोए सव्वसाहूणं ह्रीं फट् स्वाहा । इस मन्त्र को अपराजितविद्या कहा जाता है । जिसके प्रयोग से दुष्कर्मों का क्षय होकर मोक्ष की प्राप्ति होती है ।

अर्हत् सिद्धाचार्योपाध्याय—सर्वयाधुभ्यो नमः ।

माहात्म्यम् — स्मर मन्त्रपदोद्भूतां, महाविद्यां जगन्नुताम् ।

गुरुपन्चकनामोत्थषोडशाक्षरराजिताम् । । एकाग्र मन से इस षोडशाक्षरीविद्या मन्त्र का २०० बार पाठ करने पर तप और उपवास का फल प्राप्त होता है ।

अरिहंत सिद्ध(साहु) । अथवा जिनसिद्धसाहु । एकाग्र मन से इस षड्वर्णसंभूताविद्या का ३०० बार पाठ करने से उपवास करने का फल प्राप्त होता है ।

अरिहंत । अथवा जिनसिद्ध । अथवा अर्हत्सिद्ध । यह चतुर्वर्णमयमन्त्र है जिसे ४०० बार जपने से उपवास करने का फल प्राप्त होता है । यह मन्त्र धर्म, अर्थ, काम और मोक्षरूप चतुर्वर्ण का प्रदाता है ।